दिलीप चिंचालकर

बुखार में पृथ्वी

कुछ अटपटा लग रहा है। मैं खिड़की से अपने दोस्त का घर नहीं देख पा रहा हूँ। उसका घर बगीचे में खड़े काकंबीर (नीम-पीपल के ऊँचे-ऊँचे पेड़ जिन पर कौवे घोंसला बनाते हैं) की सबसे ऊपर वाली शाख पर है। नीम का यह पेड़ पूरे साल पत्तियों से ढँका रहता है। उस वक्त मैं अपने दोस्त और उसकी पत्नी को उनके घोंसले में केवल आते-जाते ही देख सकता हूँ। गर्मियों में उनके बच्चों की काँव-काँव सुन सकता हूँ। परन्तु घोंसला पतझड़ में ही दिखाई देता है।

इस वर्ष नीम के सारे पत्ते झरे नहीं हैं और नई कोंपलें फूटना शुरू भी हो गया है। पत्ते पेड़ पर बने रहेंगे तो उसे आराम करने की सालाना छुट्टी नहीं मिलेगी। पत्तियों ने धूप रोक ली तो नीचे क्यारियों में लगे पौधों पर मौसमी फूल नहीं खिलेंगे। क्योंकि लाल-पीले-जामुनी सारे रंगों को बनने के लिए धूप की आवश्यकता होती है। फूल नहीं खिलेंगे तो तितलियाँ और भौरे नहीं आएँगे। तब तो नए बीज भी नहीं बनेंगे। फिर चिड़ियाँ क्या खाएँगी? दूसरी ओर नौलक्खा में प्रभु जोशी जी के घर के गुलमोहर में दिसम्बर में ही फूल आने लगे हैं। प्रकृति में सारी बातों का एक सिलसिला लगा रहता है। उन सबके होने का समय, तापमान, आकाश से पानी का गिरना तय होता है। यह प्रभु की नहीं प्रकृति की माया है।

हो सकता है पृथ्वी के वातावरण में गर्मी बढ़ने से यहाँ-वहाँ ऐसी अजीब घटनाएँ हो रही हों। दुनियाभर के लोग मिलकर हर वर्ष 10 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड गैस वातावरण में उड़ेल देते हैं। इसमें सबसे ज़्यादा (2.5 करोड़ टन के आसपास) गैस अकेला अमरीका छोड़ता है। कम ही सही, लेकिन हम भारतीय भी इसमें शामिल हैं। सन् 1997 में 36 प्रगत देशों ने क्योटो (जापान) में मिलकर तय किया था कि सन् 2012 तक सब अपनी ग्रीन हाऊस गैसों को इतना कम कर लेंगे कि सन् 1990 में जितनी कार्बन डाईऑक्साइड वातावरण में थी उससे भी 5 प्रतिशत नीचे हो जाएगी। इस संकल्प को "क्योटो प्रोटोकोल" नाम दिया गया था। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। उल्टे सन् 1990 से 2005 के बीच कार्बन डाई ऑक्साइड का मात्रा और ज़्यादा हो गई। यह स्थिति इतनी खराब है कि अगले दस वर्षों में मारे गर्मी के दोनों ध्रुवों पर जमा सारी बर्फ पिघल सकती है।

इसलिए युरोप के सारे देश कह रहे थे कि अब तो कार्बन डाई ऑक्साइड का स्तर 25 से 40 प्रतिशत नीचे लाए बगैर काम नहीं चलेगा। अगर आज इसी क्षण कार्बन डाई ऑक्साइड उगलने वाले यंत्र-संयंत्र बन्द भी कर दें तो भी इस शताब्दी भर तक उसका असर बना रहेगा। सिर्फ अमरीका और उसके साथी देश कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, चीन वगैरह इसके लिए तैयार नहीं हैं। यही तय करने के लिए 190 देश अभी बाली में एकत्रित हुए थे और बिना खास कुछ किए वापिस चले गए। और तो और, बाली पहुँचने वाले 15 हज़ार लोग अपने पीछे 60 हज़ार से एक लाख टन कार्बन डाईऑक्साइड और छोड़ गए हैं।